एकदेशस्थितमपि यथा मार्तण्डमण्डलम् ।
दृश्यते सर्वगं सर्वैः काश्यां विश्वेश्वरस्तथा ॥१३२॥
(का० खं० अ० २६)

अर्थः- जैसे सूर्य मण्डल एक देशों में स्थित भी सभी लोगों से सर्वथा देखा जाता है, उसी प्रकार काशी में विश्वेश्वर से सभी मुक्त किये जाते हैं।

बहूपसर्गो योगोऽयं कृच्छ्रसाध्यन्तपो हि यत् ।
योगाद् भ्रष्टस्तपोभ्रष्टो गर्भक्लेशासहः पुनः ॥१५०॥
(का० खं० अ० २६)

अर्थः- योग में बहुत विघ्न हैं, तपस्या कष्ट साध्य है। योग से भ्रष्ट, तप से भ्रष्ट होकर फिर गर्भवास क्लेश सहता है।

भूमिष्ठमिव भात्येतदज्ञदृष्ट्याऽमृतादिवत् ।
मत्स्वरूपं ज्ञानदृशां भाति सत्यं वदे प्रिये ॥
(   )

अर्थः- मूर्खों की दृष्टि से यह पृथ्वी पर ठहरी हुयी की भाँति मालूम होती है, परन्तु ज्ञान दृष्टि वालों को यह काशी अमृतादि की भाँति है। हे प्रिये! मैं सत्य कहता हूँ मेरा स्वरूप ज्ञान दृष्टि वाले ही देख सकते हैं तथा जान सकते हैं।

अहम्ममाभिमानोत्थैर्दुःखैः पापच्यते जनः।
अभेदबुद्धिः सर्वत्र ज्ञानदाऽज्ञाननाशिनी।
वैराग्यादिमहामुख्यैः साधनैः सम्प्रवर्त्तते॥
(   )

अर्थ:- अहं तथा यह मेरा है इस प्रकार के अभिमान से उत्पन्न दुःखों से लोग युक्त हो जाते हैं। सभी जगह अभेद बुद्धि होना ही ज्ञानदायिनी तथा अज्ञान नाशिनी है और ऐसी बुद्धि वैराग्य आदि महामुख्य साधनों से प्राप्त होती है।

स्वाबहुतिथे काले कस्यचिन्तत्प्रजायते।
अतोज्ञानगृहम्मेऽस्ति काशी विबुधदुर्लभा॥
एकेन जन्मना तत्र मरणावसरेऽमलम्।
ज्ञानमुत्पद्यते जन्तोः श्रुतिभिर्यन्निरूपितम्॥
(   )

अर्थ:- बहुत तिथियों के बीत जाने पर किसी- किसी को ऐसी बुद्धि प्राप्त होती है। इसलिये देवों के लिये दुर्लभ ज्ञान का घर काशी है।
किन्तु एक जन्म में ही मरण के अवसर पर काशी में निर्मल ज्ञान उत्पन्न होता है, ऐसा वेदों ने कहा है।

देवेषु च यथा शम्भुतीर्थेषु मुख्येषु काशिका।
व्रतेष्वेकादशी मुख्या पुराणेषु तथा त्विदम्॥
(   )

अर्थ:- देवताओं में जैसे शङ्कर, तीर्थों में काशी, व्रतों में एकादशी व्रत वैसे ही पुराणों में शिव पुराण श्रेष्ठ है।

अल्पेन कालेन समस्तमेव सार्धं पुना रुद्रपिशाचरुद्रैः।
भवप्रसादेन कृतोपदेशाः पिशाचयोनेरपि मुक्तिमेति॥
(सनत्कुमार सं०, त्रि० से०, पृ० ३०१)

अर्थः- काशी में जो पापी मरते हैं उनको विश्वनाथ जी कृपा करके थोड़े ही समय में भयंकर रुद्रपिशाचों के साथ सभी को भगवान शिव तारक मन्त्र का उपदेश देते हैं। जिससे पिशाच योनि से भी मुक्ति मिल जाती है।

काश्यां स्थित्वाहीन्द्रियाणां व्ययं नो।
कुर्याद्यत्नात्सत्कृतं रक्षणीयम्॥
(ब्र० वै० पु०, त्रि० से० पृ० ११८)

अर्थः- काशी में रहकर इन्द्रियों का दुरुपयोग न करें, यत्न पूर्वक अच्छा कार्य करें तथा इन्द्रियों की रक्षा करें।

अविमुक्तं महाक्षेत्रं पञ्चक्रोशपरिस्थितम्।
ज्योतिर्लिङ्गं तदेकं हि ज्ञेयं विश्वेश्वराभिधम्॥१३१॥
(का० रवं० अ० २६)

अर्थः- पाँच कोशों में स्थित महाक्षेत्र का नाम 'अविमुक्त' है। जहाँ पर विराजमान ज्योतिर्लिंग का नाम विश्वनाथ जी है।

गोकर्णेशः पश्चिमे पूर्वतश्च गङ्गामध्यमुत्तरे भारभूतः।
ब्रह्मेशानो दक्षिणे सम्प्रदिष्टस्तत्तु प्रोक्तं भवनं विश्वभर्तुः॥
(पद्मपुराण)

अर्थः- गङ्गा जी के पश्चिम में गोकर्णेश तक, पूर्व में गङ्गा जी के मध्य तक, उत्तर में भारभूतेश्वर महादेव तथा, दक्षिण में ब्रह्मेशान तक विश्वभर्ता श्री विश्वनाथ जी का भवन कहा गया है। इसी के अन्तर्गत विश्वनाथ अन्तर्गृही है।

इमां यात्रां नरः कृत्वा क्षेत्रेऽस्मिन्मुक्तिजन्मनि।
न दुःखैरभिभूयेत इहामुत्रापि कुत्रचित् ॥७२॥
(काशी खण्ड अ० १००)

अर्थः- मुक्ति जन्मस्थली काशी क्षेत्र में काशी की यात्रा करने से मनुष्य इस लोक तथा परलोक में दुःखों से पीडित नही होता। काशी की प्रदक्षिणा करने वालों को किसी भी प्रकार का कष्ट नही होता। वह त्रिविध तापों से मुक्त हो जाता है।

मन्मना मम भक्तश्च मयिसर्वार्पित क्रियः।
यथा मोक्षमिहाप्नोति ह्यन्यत्र न तथा क्वचित् ॥६२॥
(मत्स्य पुराण अ०१८०)

अर्थः- शंकर जी बोले मुझमें मन लगाने वाला मेरा भक्त है और अपने किये हुये समस्त कर्मो को मुझे अर्पण कर दें। जैसा मोक्ष काशी में मिलता है वैसा अन्यत्र नहीं मिलता है।

यल्लिङ्गं दृष्टवन्तौ हि नारायण पितामहौ।
तदेवलोके वेदे च काशीति परिगीयते॥
(पद्म पुराण)

अर्थः- इस लिङ्ग का नारायण और ब्रह्मा ने दर्शन किया, वही लोक और वेद में काशी नाम से कहा जाता है।

काशी प्रदक्षिणा येन कृता त्रैलोक्यपावनी।
सप्तद्वीपा साब्धिशैला भूः परिक्रामिताऽमुना ॥५२॥
(नारद पुराण अ० ४९)

अर्थः- जिसने काशी की परिक्रमा कर ली, उसने सात द्वीप वाली प्रथ्वी समुद्र पहाड आदि सहित प्रथ्वी की परिक्रमा कर ली है।

एनमेव हि देवेशि सर्वमन्त्र शिरोमणिम् ।
काश्यामहं प्रदास्यामि जीवानां मुक्तिहेतवे ॥-८१॥
(शिवपुराण उत्तरार्द्ध अ०४)

अर्थः- विश्वनाथ जी कहते हैं कि हे देवेश यह सब मन्त्रों का शिरोमणि है। इसे ही मैं काशी में मुक्ति के लिये देता हूँ।

नित्यं विश्वेश विश्वेश विश्वनाथेति यो जपेत् ।
त्रिसंध्यं तं सुकृतिनं जपाम्यहमपि ध्रुवम् ॥
(पद्म पुराण)

अर्थः- जो नित्य विश्वेश-विश्वेश, विश्वनाथ, विश्वनाथ ऐसा जपता है। तीनों सन्ध्याओं में मैं भी उसे जपता हूँ। अर्थात् संसार सागर से तार देता हूँ।

ते विशन्ति महादेवमाज्याहुतिरिवानलम् ।
तं वै प्राप्य महादेवमीश्वराध्युषितं शुभम् ॥४६॥
अविमुक्तं कृतार्थोऽस्मीत्यात्मानमुपलभ्यते ॥
(मत्स्य पुराण अ०१८४)

अर्थः- वे महादेव में उसी प्रकार प्रवेश कर जाते हैं जैसे घी में आहुति अग्नि में प्रविष्ट कर जाती है। वे उन महादेव को तथा ईश्वर द्वारा अधिकृत शुभमय अविमुक्त को पाकर अपने को मैं कृतार्थ हूँ'- ऐसा अनुभव करते हैं।

आधिव्याधिपरिक्षिप्तो घोरतापपरिप्लुतः ।
मुच्यते सर्वदुःखेभ्यः स्तवस्यास्यानुकीर्तनात् ॥९८४॥
(काशीखण्ड अ०२८)

अर्थः- आधिव्याधि से पीड़ित और अत्याधिक तापसे व्याकुल, काशी के कीर्तन मात्र से (हर हर महादेव शम्भो काशी विश्वनाथ गंगे) सभी दुःखों से मुक्ति मिल जाती है।

माता पित्रा परित्यक्ता ये त्यक्ता निजबन्धुभिः।
येषां क्वाऽपि गतिर्नास्ति तेषां वाराणसी गतिः॥

(का० खं० अ० ३२) श्लोक - ६४

अर्थः- शिव जी कहते हैं कि माता-पिता, निज बन्धुओं द्वारा त्याग गये हैं, जिनको कहीं गति नहीं है उनको वाराणसी ~~ॐ~~ पुरी में गति होती है।

जरया परिभूता ये ये व्याधिविकलीकृताः।
येषां क्वाऽपि गतिर्नास्ति तेषां वाराणसी गतिः॥६५॥

(का० खं० अ० ३२)

अर्थः- शंकर जी कहते हैं कि जो व्यक्ति वृद्धावस्था से पीड़ित हैं तथा व्याधियों से पीड़ित हैं। जिनको कहीं गति नहीं है उनको वाराणसी में गति है।

क्व काशिवासायां सुखदा प्रवृत्तिः।
क्व पापराशौ विषये प्रवृत्तिः॥
क्व विश्वनाथानुगतिः परपदा।
क्व दीनमर्त्योपसृतिः सुदुःसहा॥

(   )

अर्थः- काशी में निवास की सुख देने वाली प्रवृत्ति कहाँ, पाप समूह रूप सांसारिक प्रवृत्ति कहाँ, मोक्ष देने वाली श्री विश्वनाथ जी की सेवा कहाँ और असहनीय दुःख देने वाली दीन एवं मरणशील प्राणियों की संगति कहाँ अर्थात काशीवास का फल सर्वोत्तम सुख देने वाला है।

अविमुक्तं यजन्ते तु मद्भक्ताः कृतनिश्चयाः।
न तेषां पुनरावृत्तिः कल्पकोटिशतैरपि ॥ २५ ॥
(मत्स्य पुराण अ० १८३)

अर्थः- निश्चय करके मेरे भक्त काशी में रहकर कल्पकोटि शतों में भी जन्म धारण नहीं करते हैं।

इन्द्रो मायाभिः पुरुरूप ईयते,
रूपं रूपं प्रति रूपो बभूव। (ऋग्वे० ६/४७/१८)

इन्द्रं मित्रं वरुणमग्निमाहुरथो दिव्यः स सुपर्णो गुरुत्मान्।
एकं सद्विप्रा बहुधा वदन्त्यग्निं यमं मातरिश्वानमाहुः॥
(ऋ०वे०, १/१६४/४६)

अर्थः- परमात्मा अपनी माया शक्तियों से अनेक रूप धारण करता है।

प्रत्येक व्यक्ति में परमात्मा का रूप है। अथवा प्रत्येक रूप में प्रवेश करके परमात्मा प्रति रूप बन गया है।

एक ही परमात्मा को इन्द्र, मित्र, वरुण, अग्नि तथा अच्छे पंखवाला गरुड़ आदि नामों से कहा जाता है।

अच्छे वेद विद् ब्राह्मण एक परमात्म तत्व को अग्नि यम तथा मातरिश्वा आदि नामों से बहुत प्रकार कहते हैं।

तेन सा महती पुण्या पुरी रुद्र भविष्यति ।
पुण्या चोदङ्मुखी गङ्गा प्राची चैव सरस्वती ॥
उदङ्मुखी योजने द्वे, गच्छेत जाह्नवी नदी ।

(ब्रह्म पुराण)

अर्थ:- हे रुद्र इसी से वह बहुत बड़ी पुण्या पुरी होगी, जहाँ उत्तरमुख - उत्तरवाहिनी गङ्गा तथा पूर्व वाहिनी सरस्वती है।

जहाँ उत्तर मुख को बहने वाली दो योजन गङ्गा जी हैं।

तस्य दर्शनमात्रेण तत्वज्ञान विधायकम् ।
पापक्षयमवाप्नोति सर्वथा नाऽत्र संशय: ॥

(त्रि० सेतु)

अर्थ → मणिकर्णिका कुण्ड के दर्शनमात्र से पाप क्षय हो जाते हैं, ~~स्न~~ तत्व ज्ञान होता है और उसमें स्नान करने से सर्वथा पाप क्षय होता है, इसमें संशय नहीं है।

ब्रह्मण: परमं स्थानं ब्रह्मणाध्यासितं च यत् ।
ब्रह्मणा सेवितं नित्यं ब्रह्मणा चैव रक्षितम् ॥
ब्रह्मा तु तत्र भगवांस्त्रिसन्ध्यं चेश्वरे स्थित: ।
पुण्यात् पुण्यतमं क्षेत्रं पुण्यकृद्भिर्निषेवितम् ॥
(मत्स्य पुराण)

अर्थ:- ब्रह्मा का परम स्थान ब्रह्म से अधिष्ठित है। ब्रह्म से सेवित तथा ब्रह्म से रक्षित यह स्थल काशी है। भगवान् ब्रह्मा तीनों काल ईश्वर भगवान् शंकर में विराजमान हैं, अत: पवित्र से पवित्रतम यह क्षेत्र पुण्यात्माओं से सेवित है।

नाऽन्यत्पश्यामि जन्तूनां मुक्त्वा वाराणसीं पुरीम् ।
सर्वपापप्रशमनं प्रायश्चित्तं कलौ युगे ॥ ७० ॥
(का० खं० अ० ६४)

अर्थ:- ब्रह्मा कार्तिकेय जी से बोले- वाराणसी पुरी को छोड़कर जीवों के सभी पापों को नष्ट करने का अन्य कोई भी प्रायश्चित्त मैं नहीं देख रहा हूँ। इस कलिकाल में सभी पापों को नष्ट करने के लिये एक मात्र काशीवास ही प्रायश्चित्त है।

सत्यं शौचमहिंसा च क्षान्तिर्दानं दया दम: ।
अस्तेयमिन्द्रियारोध: सर्वेषां धर्मसाधनम् ॥ ८६ ॥
(का० खं० अ० ४०)

अर्थ:- सत्य, शौच, अहिंसा, शान्ति, दान, दया, दम, चोरी न करना, इन्द्रियों को वश में रखना ये सभी के लिये धर्म का साधन है।

काश्यां श्रीदेवदेवस्य विश्वनाथस्य पूजनम्।
सर्वपापहरं पुंसामनन्ताभ्युदयावहम्॥
संसारदावनिर्दग्ध जीवभीरुह जीवनम्।
दुःखार्णवौघपतित प्राणिनिर्वाणकारणम्॥
(शिव पुराण)

अर्थः- काशी में देवाधिदेव श्री विश्वनाथ जी का पूजन समस्त पापों को अपहरण करने वाला तथा मनुष्यों के अभ्युदय कारक है।

संसार रूपी दावाग्नि से दग्ध जीव रूपी वृक्षों को जीवित करने वाला एवं दुःख रूपी सागर में गिरे हुये प्राणियों के उद्धारक हैं।

अष्टाङ्गयोगाभ्यासेन यत्पुण्यमपि जायते।
तत्पुण्यं साधिकं भूयाच्छ्रद्धा काशीनिषेवणात्॥८५॥
(का० खं० अ० २५)

अर्थः- अष्टांग योगाभ्यास से जो पुण्य प्राप्त होता है, उनसे अधिक पुण्य श्रद्धा से काशी सेवन से होता है।

चतुर्णामपि वेदानां पुण्यमध्ययनाच्चयत्।
तत्पुण्यं जायतां काश्यां गायत्री लक्षजाप्यतः॥८४॥
(का० खं० अ० २५)

अर्थः- चारों वेदों के अध्ययन से जो पुण्य प्राप्त होता है, वही पुण्य काशी में एक लाख गायत्री के जपने से प्राप्त हो जाता है।

जन्मान्तरं सहस्रेण मोक्षोऽन्यत्राप्यते न वा ।
एकेन जन्मना मोक्षः कृत्तिवासेऽत्र लभ्यते ॥
(कूर्म पुराण)

अर्थः- हजारों जन्मों के बाद अन्यत्र मोक्ष मिले या नहीं इसमें सन्देह है, किन्तु इस कृत्तिवास भगवान शिव के स्थान काशी में एक ही जन्म में मोक्ष असम्भावी है।

इत्याद्याः कोटिसंख्याश्च मुनयो दीर्घदर्शिनः ।
भस्मोद्धूलितसर्वाङ्गास्त्रिपुण्ड्राङ्कितमस्तकाः ॥२१॥
(काशी मूलरहस्य) अ०१

अर्थः- शिवयोगी मानधाता से कहते हैं कि काशी में महर्षि और दीर्घ दर्शी मुनि करोड़ों की संख्या में वे सब भस्म से लिपटे हुये देह वाले त्रिपुंड धारण करने वाले हैं।

रुद्राक्षमालाभरणाः पञ्चाक्षरपरायणाः ।
शिवागमरहस्यानि श्रुतीश्चैव व्यचारयन् ॥२२॥
(काशी मूल रहस्य अ०१)

अर्थः- रुद्राक्ष की माला धारण किये हुये पञ्चाक्षर मन्त्र का जप करते हुये, शिवागम रहस्य का वेद के साथ तुलनात्मक विचार करते हुये निवास करते हैं।

पञ्चाक्षरं हृदि ध्यायन् + रुद्राध्यायजपावृतौ ।
शिवयोः सन्निधिं गत्वा सम्प्रणम्य स्तुवन् हृदा
(   )

अर्थः- पञ्चाक्षर को हृदय में ध्यान करता हुआ। रुद्र की माला पहिन कर शिवा और शिव के सन्निधि जाकर प्रणाम करें और हृदय से स्तुति करें।



पुरीं वैश्वेश्वरीं प्राप्तो मनः स्वास्थ्यमवाप च ।
ततः प्रापय्य तां काशीं तापसः क्वाप्यतर्कितम् ॥ ८५ ॥
(का० खं० अ० ८६)

अर्थः- विश्वेश्वर की यह पुरी काशी मुझे प्राप्त हुई अतः मन भी स्वस्थ हो गया। अतः काशी में कुछ अलौकिक अचिन्त्य ही पुण्य प्राप्त होता है।

येन काश्यां समभ्यर्चि येन काश्यां प्रतिष्ठितम् ।
येन काश्यां स्तुतं लिङ्गं सेमत्र्याय दर्पणः ॥ ८७ ॥
तत्वं स्वच्छोऽसि मुकुरो मम नेत्रत्रयस्यहि ।
काश्यां लिङ्गार्चनात्त्वाष्ट्र वरं वरय सुव्रत ॥ ८८ ॥
काश्यां यो राजधान्यां मे हित्वा मामन्यमर्चयेत् ॥ ८९ ॥
(का० खं० अ० ८६)

अर्थः- विश्वनाथ जी कहते हैं कि जिसने काशी में लिङ्ग की पूजा की है, जिसने काशी मे लिङ्ग की प्रतिष्ठा की है, जिसने काशी में उनकी स्तुति की है, वह मेरे तीनों नेत्रों के लिये स्वच्छ दर्पण है। काशी में लिङ्गार्चन से मनोरथ की प्राप्ति होत है। मेरी राजधानी में मेरी उपासना छोड़कर अन्य की अर्चना व्यर्थ ही है।

संसारभयनिर्मुक्ताः सर्वपापविवर्जिताः ।
सुखेन मोक्षमायान्ति यथा सुकृतिनस्तथा ॥
ज्ञात्वा कलियुगं घोरमप्रकाश्यं कृतं मया ॥
(लिङ्ग पुराण)

अर्थः- शंकर जी कहते हैं कि संसार के भय से मुक्त सभी पापों से रहित पुण्यात्मा के पास सुख पूर्वक मोक्ष आता है। चूँकि घोर कलियुग को जानकर इस काशी को मैंने गुप्त रखा है।



यः स्नात्वोत्तरवाहिन्यां याति विश्वेशदर्शने।
श्रद्धया परया तस्य श्रेयसोऽन्तो न विद्यते ॥८७॥
(का० खं० अ० ३)

अर्थः- काशी में जो उत्तरवाहिनी गङ्गा जी में स्नान करके परम श्रद्धा से विश्वनाथ जी का दर्शन करता है, वह अनन्त पुण्य को प्राप्त करता है।

हरकाशी हर काशी काशी काशी हर हर।
शिवा काशी शिवा काशी काशी काशी शिवा शिवा ॥
( )

अर्थः- शिव ही काशी है, शिव ही काशी है। काशी शिव है काशी शिव है।

यत्सुखं काशीवासेऽन्न न तद् ब्रह्माण्डमण्डपे।
अस्ति चेत्कथं सर्वे काशीवासाभिलाषुका ॥८२॥
(का० खं० अ० ३)

अर्थः- काशीवास में जो सुख है वह ब्रह्माण्डतत्व में नहीं है। यदि है तो सभी काशीवास की कामना क्यों करते है।

संसारभयनिर्मुक्ताः सर्वपापविवर्जिताः।
सुखेन मोक्षमायान्ति यथा सुकृतिनस्तथा ॥
ज्ञात्वा कलियुगं घोरम् प्रकाश्यं कृतं मया ॥
(लिङ्ग पुराण)

अर्थः- शंकर जी कहते हैं कि संसार के भय से मुक्त सभी पापों से रहित पुण्यात्मा के पास सुख पूर्वक मोक्ष आता है। चूँकि घोर कलियुग को जानकर इस काशी को मैंने गुप्त रखा है।

कलि में काशी ही समस्त पापों का प्रायश्चित्त स्वरूप है।

वाराणसी तु भुवनत्रय सारभूता रम्या
नृणां सुगतिदा किल सेव्यमाना।
अत्रागता विविधदुष्कृत कारिणोऽपि,
पापक्षये विरजसः सुमनः प्रकाशाः॥
(नारद पुराण)

अर्थ :- वाराणसी पुरी तीनों लोकों का सारभूत है। अनेक प्रकार के दुष्कर्म करने वाले भी काशी में आकर पवित्र हो जाते हैं, उनका मन निर्मल हो जाता है।

ब्राह्मणाः क्षत्रिया वैश्याः शूद्रा वै वर्णसङ्कराः।
स्त्रियो म्लेच्छाश्च ये चान्ये सङ्कीर्णाः पापयोनयः॥
कीटाः पिपीलिकाश्चैव ये चान्ये मृग पक्षिणः।
चन्द्रार्द्धमौलिनः सर्वे ललाताक्षा वृषध्वजाः।
शिवे मम पुरी देवि जायते नात्र संशयः॥
(कूर्म पुराण १।३१।३१।३२)

अर्थ :- विश्वनाथ जी अन्नपूर्णा जी से कहते हैं, अन्नपूर्णा, ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र, वर्ण-शंकर, स्त्री, म्लेच्छ और दूसरे संकीर्ण पापयोनि के लोग कीट, चींटी, पशु, मृग एवं पक्षी काशी में शरीर छोड़ने से चन्द्रमौलि शिव जी के ललाताक्ष वृषध्वज शिवरूप में हो जाते हैं, इसमें कोई संदेह नहीं है।



काशिका सकल तीर्थ सेविता,
काशिका सकल देव पूजिता ।
काशिका सकल शास्त्र वर्णिता,
काशिका परम पद प्रकाशिका ॥

र्थ — यह काशी समस्त तीर्थों से सेवित है। काशी समस्त देवों से पूजित है, काशी समस्त शास्त्रों से वर्णित है, तथा काशी परम पद की प्रकाशिका है।

स्कन्द जी अगस्त्य ऋषि से

महापातकिनो देवि! ये तेभ्यः पापकृत्तमाः ।
वाराणसी समासाद्य ते यान्ति परमां गतिम् ॥
(पद्म पुराण अ० ३३ श्लोक ४३)

र्थ :- हे देवि जो महापातकी हैं जो उनसे भी बढ़कर हैं वे काशी (वाराणसी) प्राप्त कर परम गति प्राप्त करते हैं।

परं गुह्यतमं क्षेत्रं मम वाराणसी पुरी ।
सर्वेषामेव भूतानां संसारार्णवतारिणी ॥
(पद्म पुराण स्वर्ग खण्ड अ० ३३ श्लोक ६)

अर्थ — युधिष्ठिर ने नारद जी से पूछा कि वाराणसी का विस्तृत महात्म्य कहें नारद जी ने ईश्वर देवी सम्वाद से इसी विषय पर जो कहा वह सुना — हे पार्वती मेरी काशी (वाराणसी) पुरी अत्यन्त गुप्त क्षेत्र है। यह संसार के समस्त जीवों को संसार सागर से पार करती है।

बहुजन्मशताभ्यासाद्योगी मुच्येत वा न वा ।
मृत मात्रोऽपि मुच्येत काश्यामेकेन जन्मना ॥
(काशी खण्ड)

अर्थ:- बहुत से सैकड़ों जन्मों के अभ्यास से भी योगी को मुक्ति मिले या न मिले, किन्तु काशी में मृत मात्र से एक ही जन्म में मुक्ति मिल जाती है ।

दत्तं जप्तं हुतं चेष्टं तपस्तप्तं कृतं च यत् ।
ध्यानमध्ययनं ज्ञानं सर्वं तत्राक्षयं भवेत् ॥
(कूर्म पु० १।३१।२६)

अर्थ:- काशी में किया हुआ दान, जप, हवन, यज्ञ,

अन्यत्र यत्कृतं पापं तत्काश्यां ~~परिमुच्य~~ परिणश्यति,
नाऽन्यत्पश्यामि जन्तूनां मुक्त्वा वाराणसीम् पुरीम् ।
सर्व पाप प्रशमनीं प्रायश्चित्तं कलौ युगे ॥
(स्क० पु० का० ख० ४)

अर्थ:- अन्य स्थानों में किये गये पाप काशी में नष्ट हो जाते हैं ।
काशी पुरी को छोड़कर समस्त पाप नष्ट करने वाली दूसरी कोई वस्तु नहीं दीख पड़ती है ।



दान

कलौ विश्वेश्वरो देव: कलौ वाराणसी पुरी ।
कलौ भागीरथी गंङ्गा दानं कलियुगे महत् ॥
(काशीखण्ड)

अर्थ → कलियुग में देवता विश्वेश्वर हैं, कलियुग में पुरी वाराणसी है, कलियुग में गंगा भागीरथी हैं और कलियुग में दान ही महान है।

दानान्यपि स्वस्व वित्तानुसारेण कृतानि वै ।
दूर्वा पत्रं पुष्पजातं शिवेऽर्पित ममोघ कृत ॥
[काशी गुप्तरहस्य, अ०-१८]

अर्थ → अपने-अपने शक्ति के अनुसार (सम्पत्ति-अनुसार) प्रतिदिन दान करें। चूँकि दूर्वापत्र फूल आदि वस्तु शिवार्पण करने से अमोघ फल होकर प्राप्त होता है।

काश्यामन्नप्रदानादि दानान्यघहराणि वै ॥
(काशी गु०, अ०-२१, श्लो०-८६)

अर्थ → काशी में अन्न-दान करने पाप नष्ट होता है।

तत्र दत्वा महादानं तत्र कृत्वा महद्व्रतम् ।
तत्राचित्याखिलमं वेदं च्यवते न नरो दिव: ॥
(काशीखण्ड)

दान

अर्थ → काशी अविमुक्त नामक इस क्षेत्र में महादान देकर महाव्रत कर तथा समस्त वेदों को पढ़कर मनुष्य स्वर्ग से नहीं गिरता।

प्रातः समर्च्य माम भक्त्या भोजयित्वा द्विजानपि।
दत्वा गाः काञ्चनम् भूमिं न भूयो भूमि भाग भवेत॥
(काशी खण्ड, अ०-६१)

अर्थ → ~~विन्दु माधव~~ विष्णु जी बोले विन्दु माधव पञ्चगङ्गा में स्नान करके प्रातः मेरी पूजा कर भक्ति से ~~मेरी पूजा कर~~ ब्राह्मणों को भोजन कराकर सुवर्ण गौ तथा भूमि दान देने वाला व्यक्ति पुनः पृथ्वी पर जन्म नहीं लेता।

॥ नरो न जायते भूयः संसारे दुःख संकटे।"
दीर्घायुर्वस्त्रवासो भि ज्ञानं पुस्तके दानतः।
अन्नदानेन सम्पत्तिं कीर्ति कन्या प्रदानतः॥
(का० खं०, अ० ९६, श्लो०-१११)

अर्थ → मनुष्य संसार में दुःख संकट का भागी नहीं होता है। व्यक्ति वस्त्र दान से दीर्घायु, पुस्तक दान से ज्ञानी, अन्न-दान से सम्पत्तिशाली, कन्यादान से कीर्ति प्राप्त करता है।

दान माहात्म्य

~~सौभाग्य श्रद्धयावेण~~

दत्वाद्दानानि भूरीणिमखानि निवसतु भू ।
(का० खं०, अ०-२४ ।

अर्थ → जिन्होंने काशी में अनेकों में अनेकों प्रकार के दान दिये हैं, उन्होंने मानो बहुत सा यज्ञ सम्पादित किया है।

वाराणसी जाह्नव्यां संगमे लोक विश्रुते ।
दत्वादानं च विधानेन न स भूयोऽभिजायते ॥
(लिङ्गपुराण)

अर्थ → संसार प्रसिद्ध वाराणसी ~~[illegible] तथा अस्सी~~ गंगा के संगम में (अस्सी घाट पर) और वरुणा संगम आदि केशव में विधि पूर्वक अन्न-दान करने से पुनर्जन्म नहीं होता है।

दान माहात्म्य

~~सौविना श्रद्धेयाचेन~~

दत्वादानानि भूरीणि मखान नितचतु भू ।
(का० खं०, अ० - ८६ ।

अर्थ → जिन्होंने काशी में अनेकों में अनेकों प्रकार के दान दिये हैं, उन्होंने मानो बहुत सा यज्ञ सम्पादित किया है।

वाराणसी जाह्नवीभ्यां संगमे लोक विश्रुते ।
दत्वादानं च विधानेन न स भूयोऽभिजायते ॥
(लिङ्ग पुराण)

अर्थ → संसार प्रसिद्ध वाराणसी गंगा के संगम में (अस्सी घाट पर) और वरुणा संगम आदि केशव में) विधि पूर्वक अन्न-दान करने से पुनर्जन्म नहीं होता है।

गंगा - माहात्म्य

पापतापाभितप्तानां भूतानामिह जाह्नवी ।
पापताप हरान्या द्वगंङ्गा नान्य तथा कलौ ॥
(काशीखण्ड, अ०-२८)

अर्थ → कलियुग में गंङ्गा के सदृश पाप-ताप से अभितप्त मनुष्यों के लिये गंङ्गा से बढ़कर दूसरा नहीं है।

"स्वर्गदा सर्व जन्तूनां महापातकिनामपि"
(का० खं० अ०-२८)

अर्थ — गंङ्गा महापातकियों को भी स्वर्ग देने वाली हैं।

गंङ्गायां स्नाति यो मर्त्यो यावज्जीवं दिने दिने ।
जीवन्मुक्तः सविज्ञेयो देहान्ते मुक्त एव सः ॥
(का० खं०, अ० -२६)

अर्थ → ~~पो~~ गंङ्गाजी में प्रतिदिन व्स्नान करने वाले व्यक्ति को जीवनमुक्त जानना चाहिए। मरने पर तो वह मुक्त है ही।

तिथि नक्षत्र पुर्वादिना वेक्ष्यं जाह्नवी जले ।
स्नानमात्रेण गङ्गायां सञ्चिताघ विनश्यति ॥
(का० खं, अ०-२६)

अर्थ → तिथि, नक्षत्र, पर्व आदि की अपेक्षा करके गङ्गा जी के जल में स्नान मात्र से व्यक्ति जीवन-कृत सञ्चित पापों से मुक्त हो जाता है।

~~मरणोत्तर मुक्ति~~ गङ्गा माहात्म्य

कृमिकीट पतङ्गाद्या ये मृता जाह्नवी तटे ।
कूलात् पतन्ति ये वृक्षास्तेऽपि यान्ति परां गतिम् ॥
(का० खं, अ० - २६, १३५ श्लो०)

अर्थ — कृमि कीट, पतंग जो भी गंङ्गाजी में मरते हैं, तट के वृक्षों से जो पत्ते गिरते हैं सभी मोक्ष प्राप्त करते हैं।

ज्येष्ठे मासि सिते पक्षे दशम्यां हस्तसंयुते ।
गङ्गा तीरे तु पुरुषो ~~नारी~~ नारी वा भक्तिभावतः ॥
(का० खं, अ० - २६ श्लो० - १३५)

अर्थ → ज्येष्ठ महिने में शुक्ल हस्त नक्षत्र युक्त दशमी को गंगा जी में जो पुरुष, स्त्री भक्ति भाव से स्नान करता है, वह भी मुक्त हो जाते हैं।

कूपवापी तडागादि प्रपास्त्रादिभिस्तथा ।
अन्यत्र यद्भवेत्पुण्यं तद्गंङ्गा दर्शनाद्भवेत् ॥
(का० खं०, अ० - २६)

अर्थ → कूप, बावली, पोखरा, पवसरा, यज्ञादि करने से जो पुण्य होता है, वह पुण्य गंगा के ~~दर्शन~~ दर्शन मात्र से होता है।

निशायां जागरं कुर्याद् गङ्गा देवा चित्ते हरे : ।
पुष्पैः सुगन्धैर्नैवेद्यैः फलैर्दशदशोन्मितैः ॥
(का० खं०, अ०-२९, श्लो० १३६)

अर्थ → रात्रि में जागरण करना चाहिए हे हरे। दश प्रकार के पुष्पों सुगन्धित फल, नैवेद्य से गंगा की पूजा करनी चाहिए ।

अन्यत्र यत्कृतं कर्मव्रतं दानं जपस्तपः ।
गङ्गातटे तु सर्वस्वं हरे। कोटिगुणं भवेत् ॥
(का० खं०, अ०-२९, श्लो०-११२)

अर्थ → हे हरे! अन्यत्र किया गया कर्म व्रत, दान, जप, तप, ये गंगा-तट पर करने से कोटि गुणा फल का भागी होता है।

जन्मर्क्षे तु कृते स्नाने गङ्गायां भक्तिपूर्वकम् ।
जन्मप्रभृति पापौघात्सञ्चितान्मुच्यते क्षणात् ॥
(का० खं०, अ० -२९.श्लो०.११८)

अर्थ → जन्म नक्षत्र में भक्ति पूर्वक गङ्गा स्नान करने पर जन्म से संचित पाप से तत्क्षण मुक्ति मिलती है

वैशाखे कार्तिके माघे गंगास्नानं सुदुर्लभम् ।
दर्शे शतगुणं पुण्यं संक्रान्तौ च सहस्रकम् ॥
(का० खं०, अ०-२६, श्लो०-१२८)

अर्थ → वैशाख कार्तिक, माघ के महीने में गंगा स्नान दुर्लभ है। अमावस्या में शतगुणा पुण्य तथा संक्रान्ति में हजार गुणा पुण्य होता है।

श्रद्धया भक्तियुक्तस्तु गंगां स्नात्वा विधानतः ।
ब्रह्महाऽपि विशुद्ध्येत किं पुनस्त्वन्यपातकी ॥
(का०खं०, अ०-२६, श्लो०-१३३)

अर्थ → विधि पूर्वक श्रद्धा भक्ति युक्त गंगा में स्नान करने से ब्रह्महत्यारा भी शुद्ध हो जाता है। अन्य पातकी की क्या बात है?

कीदृशी सा महागङ्गा साक्षाच्छम्भुस्वरूपिणी ।
यस्या दर्शनतो मुक्तिर्न जाने स्नानजं फलम् ॥
(का० गु०)

अर्थ → साक्षात् भगवान शिव की स्वरूप गंगा जी का महत्व कितना है जिसके दर्शन से मुक्ति मिल जाती है, तो फिर स्नान करने से कितनी मुक्ति मिलेगी मैं नहीं जानता।